

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमास्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

श्रीमद्रामायणे बाल्मीकीये आदिकार्ये अरण्यकाण्डे

॥ त्रिषष्टितमः सर्गः ॥

This document has been prepared by

Sunder Kidāmbi

with the blessings of

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam

श्रीः
श्रीमते रामानुजाय नमः
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः
श्रीसीतालम्बुणभरतशङ्करहनुमत्समेत श्रीरामचन्द्र परब्रह्मणे नमः

॥ त्रिषष्टितमः सर्गः ॥

श्रीरामस्य विलापः

स राजपुत्रः प्रियया रिहीनः
शोकेन मोहेन च पीड्यमानः।
विषादयन् भ्रातरमार्तरूपो
भूयो विषादं प्रविशेश तीव्रम् ॥ 3.63.1 ॥

स लम्बुणं शोकवशाभिपन्नं
शोके निमग्नो विपुले तु रामः।
उवाच वाक्यं व्यसनानुरूप -
मुष्णं विनिःश्वस्य रुदन् सशोकम् ॥ 3.63.2 ॥

न मद्बिधो दुष्कृतकर्मकारी
मन्ये द्वितीयोऽस्ति वसुधारायाम्।
शोकानुशोको हि परम्पराया
मामेति भिन्दन् हृदयं मनश्च ॥ 3.63.3 ॥

पूर्वं मया नूनमभीप्सितानि
पापानि कर्माण्यसकृत्कृतानि।
तत्रायमद्यापतितो विपाको
दुःखेन दुःखं यदहं विशामि ॥ 3.63.4 ॥

রাজ্যপ্রণাশঃ স্বজনৈরিযোগঃ
 পিতুরিনাশো জননীরিযোগঃ।
 সর্বাণি মে লক্ষ্মণ শোকরেগ -
 মাপূরযন্তি প্রিচিন্তিতানি ॥ 3.63.5 ॥

সর্ং তু দুঃখং মম লক্ষ্মণেদং
 শান্তং শরীরে রনমেত্য শূন্যম্।
 সীতারিযোগাৎ পুনরপ্যুদীর্গং
 কাঠৈরিরাগ্নিঃ সহসোপদীপ্তঃ ॥ 3.63.6 ॥

সা নুনমার্যা মম রাক্ষসেন
 হ্যভ্যাহতা খং সমুপেত্য ভীরুঃ।
 অপস্বরং সুস্বররিপ্রলাপা
 ভযেন রিক্রন্দিতরত্যভীক্ষম্ ॥ 3.63.7 ॥

তৌ লোহিতস্য প্রিষদর্শনস্য
 সদোচিতারুত্তমচন্দনস্য।
 বৃত্তৌ স্তনৌ শোণিতপঙ্কদিক্ষৌ
 নুনং প্রিয়াযা মম নাভিপাতঃ ॥ 3.63.8 ॥

তচ্ছলক্ষসুর্যক্তমৃদুপ্রলাপং
 তস্যা মুখং কুঞ্চিতকেশভারম্।
 রক্ষোরশং নুনমুপাগতাযা
 ন ভ্রাজতে রাহ্মুখে যথেন্দুঃ ॥ 3.63.9 ॥

তাং হারপাশস্য সদোচিতান্তাং
 গ্রীরাং প্রিয়াযা মম সুব্রতাযাঃ।
 রক্ষাংসি নুনং পরিপীতরন্তি
 শূন্যে হি ভিত্ত্বা রুধিরাশনানি ॥ 3.63.10 ॥

মযা রিহীনা রিজনে রনে সা
 রক্ষোভিরাহত্য রিকৃষ্যমাণা।
 নুনং রিনাদং কুররীর দীনা
 সা মুক্তরত্যাযতকান্তনেত্রা ॥ 3.63.11 ॥

অস্মিন্ মযা সার্থমুদারশীলা
 শিলাতলে পূর্নমুপোপরিষ্টা।
 কান্তস্মিতা লক্ষ্মণ জাতহাসা
 ঞ্জামাহ সীতা বহুরাক্যজাতম্ ॥ 3.63.12 ॥

গোদাররীযং সরিতাং ররিষ্ঠা
 প্রিয়া প্রিয়াযা মম নিত্যকালম্।
 অপ্যত্র গচ্ছেদিতি চিন্তয়ামি
 নৈকাকিনী যাতি হি সা কদাচিৎ ॥ 3.63.13 ॥

পদ্মাননা পদ্মপলাশনেত্রা
 পদ্মানি রানেতুমভিপ্রযাতা।
 তদপ্যযুক্তং নহি সা কদাচি -
 ন্মযা রিনা গচ্ছতি পঙ্কজানি ॥ 3.63.14 ॥

কামং ঞ্জরিদং পুষ্পিতবৃক্ষষণ্ডং
 নানারিধৈঃ পক্ষিগণৈরুপেতম্।
 রনং প্রযাতা নু তদপ্যযুক্ত -
 মেকাকিনী সাতিবিভেতি ভীরুঃ ॥ 3.63.15 ॥

আদিত্য ভো লোককৃতাকৃতজ্ঞ
 লোকস্য সত্যানৃতকর্মসাক্ষিন্।
 মম প্রিয়া সা ক্ল গতা হতা রা
 শংসস্ব মে শোকহতস্য সর্নম্ ॥ 3.63.16 ॥

লোকেষু সর্বেষু ন নাস্তি কিঞ্চিদ্
 যৎ তে ন নিত্যং রিদিতং ভরেৎ তৎ।
 শংসস্ব রাযো কুলপালিনীং তাং
 মৃতা হতা রা পথি র্ততে রা ॥ 3.63.17 ॥

ইতীর তং শোকরিধেষদেহং
 রামং রিসংজ্ঞং রিলপন্তমের।
 উরাচ সৌমিত্রিরদীনসত্ত্বো
 ন্যায্যে স্থিতঃ কালযুতং চ রাক্যম্ ॥ 3.63.18 ॥

শোকং রিসৃজ্যাদ্য ধৃতিং ভজস্ব
 সোৎসাহতা চাস্ত রিমার্গণেহস্যাঃ।
 উৎসাহরন্তো হি নরা ন লোকে
 সীদন্তি কর্মস্বতিদুষ্করেষু ॥ 3.63.19 ॥

ইতীর সৌমিত্রিমুদগ্রপৌরুষং
 ব্রুরন্তমার্তো রঘুরংশরর্ধনঃ।
 ন চিন্তযামাস ধৃতিং রিমুক্তরান্
 পুনশ্চ দুঃখং মহদভ্যুপাগমৎ ॥ 3.63.20 ॥

॥ ইত্যার্ষে শ্রীমদ্রামাযণে রান্মীকীযে আদিকার্যে অরণ্যকাণ্ডে ত্রিষষ্টিতমঃ সর্গঃ ॥